खण्ड-316, अंक-3
गुरूवार, 27 चैत्र, शक संवत् 1897
(17 अप्रैल, 1975 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 316 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1975

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

वृहस्पतिवार, 17 अप्रैल, 1975

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री वासुदेव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य--288

अंगने लाल, श्री
अजीजुर्रहमान, श्री
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार जमील उर्फ जिमी मियां, श्री (एडवोकेट)
अनवार मोहम्मद, श्री
अबुल फैज शाह, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
आगा जैदी, श्री
आबिद अली, श्री
इन्द्रपाल सिंह, श्री
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओम प्रकाश, श्री (जिला मुरादाबाद)
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री
ओम प्रकाश सिंह, श्री
कन्हया लाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
का० मु० मुहीउद्दीन, श्री
काली चरण यादव, श्री
काशी नाथ मेहरोत्रा, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण दत्त, श्री (उर्फ बालराज)
कृष्णवीर सिंह, श्री
कृष्णा राय, श्री
केशरी लाल, श्री
कैलाश सिंह, श्री
क्रान्ति कुमार, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा प्रसाद, श्री
गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गायत्री देवी, श्रीमती
गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गिरिजा शंकर पाठक, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपी नाथ कामेश्वरपुरी, श्री
गोरे लाल शाक्य, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
गौरी शंकर, श्री (एडवोकेट)
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्द्र भान आजाद, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह, डाक्टर,
चेतराम गंगवार, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जंग बहादुर, श्री (अतरौलिया जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर वर्मा, श्री
जगदीश मिश्र, श्री

जगदीश अवस्थी, श्री
जगदीश नरायन त्रिपाठी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराज गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
झाम लाल अहिरवार, श्री
झिलमिट, श्री
तेज बहादुर, श्री
तेज सिंह, श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
त्रिवेनी, श्री
दधीच सिंह, श्री
दया किशन पांडेय, श्री
दया राम भास्कर, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनारायण पाण्डेय, श्री
दीपनारायन बन महन्थ, श्री
दुलारा देवी, श्रीमती
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री
धर्मपाल सिंह, डाक्टर
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
धीरेन्द्र सहाय, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजू राम, श्री
नत्थू सिंह यादव, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हे लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथूराम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण हरी शर्मा श्री
नियाज हसन खां, श्री
निसार अहमद अन्सारी, श्री
पूरन चन्द, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला अलीगढ़)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्रकाश नारायण गुप्ता, डाक्टर
प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभु दयाल, श्री
फरजन्द अली बेग, श्री
बंशीधर, श्री
बच्चा पाठक, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बल्देव, श्री
बांके लाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बालकृष्ण सनवाल, श्री
बृजपाल सिंह यादव, श्री
बैचन राम, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
बैजनाथ यादव, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीषम, श्री
भूपसिंह केन, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मनीराम, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्नू खां)
मलखान सिंह, डाक्टर
मलखान सिंह सैनी, श्री
मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महाबीर प्रसाद, श्री
महाबीर सिंह, श्री
महेन्द्र रिपुदमन सिंह, राजा
माता प्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मानबहादुर सिंह, श्री

मक्खू लाल द्विवेदी, श्री
मुमताज मोहम्मद खां, श्री
मुलतान सिंह यादव, चौधरी
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मुहम्मद मसूद खां, श्री
मोहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहन सिंह, श्री
मोहम्मद अयूब सिद्दीकी, श्री
मोहम्मद असलम, श्री
मोहम्मद महमूद अली खां, श्री
मोहम्मद शकील अहमद, श्री
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यशपाल सिंह, श्री
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ लल्लन जी)
रघुनाथ, श्री
रघुबीर, श्री
रघुबीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)
रघुराज सिंह, श्री (जिला देवरिया)
रणजीत सिंह 'जूदेव', श्री
रणधीर सिंह, श्री
रफीउल्ला, श्री
रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राघवेन्द्र सिंह, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राज बहादुर, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद दौनेरिया, श्री
राजेन्द्र शाह, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राम अधार, श्री
रामगरीब, कैप्टेन
राम चन्द्र बक्स सिंह, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी लाल केन, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
रामजी सिंह, श्री
राम दयाल सिंह, श्री
राम दुलारे, श्री
राम नाथ, बाबा
राम नारायण पाठक, श्री
राम निहोर, श्री
राम पति, श्री
राम पूजन पटेल, श्री
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री
राम प्रकाश यादव, श्री
राम बचन, श्री
राममूर्ति, श्री
राम रतन सिंह, श्री
रामरति बिन्द एडवोकेट, श्री
रामरती देवी, श्रीमती
राम रेखा यादव, श्री
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लखन, श्री (जिला बस्ती)
राम शिरोमणि दूबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
राम सुमुझ तिवारी, श्री
राम सुन्दर पाण्डेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम स्वरूप भारतीय, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूप राम, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्ष्मी नरायण पांडेय, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लालन शर्मा, श्री
लालू राम, श्री
विजय पाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विमल प्रसाद तिवारी, श्री
विश्राम, श्री
वीर सिंह सेंगर, श्री
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शान्ति देवी यादव, श्रीमती
शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शिव कुमार पाण्डेय, श्री
शिव कुमारी दूबे, श्रीमती

शिवचरन लाल, श्री
शिवपाल सिंह, श्री
शिव प्रसाद, श्री
शिव प्रसाद गुप्त, श्री
शिव सम्पत्ति राम, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा देवी, श्रीमती
श्रीनरायण श्री, (उर्फ मुलई भाई)
श्रीपाल सिंह, कुंवर
सत्तार अहमद, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्यवीर सिंह, श्री
सन्तोष कुमारी पाठक, श्रीमती
सरस्वती टम्टा, श्रीमती
सलाहउद्दीन उस्मानी, श्री (उर्फ नज्जन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदा मिश्रा, श्रीमती
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल कुरील, श्री
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री
सुल्तान सिंह यादव, श्री
सैयद मुर्तजा अली खां, नवाब
सोहन लाल, श्री (जिला बदायूं)
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
हर प्रताप सिंह, श्री
हरि केवल, श्री
हरि राम, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम सिंह, श्री
हुब राज, श्री
हेमराज, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मन्त्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)—

माननीय अध्यक्ष जी, आधुनिक भारत के महर्षि, भारतीय संस्कृति के प्रतीक, अद्वितीय विद्वान्, भारत के शिक्षक जगत के चमकते हुए सूर्य, विद्या के वरदपुत्र, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन के अभिन्न अंग, प्रतिभावान, भारत देश से सम्बन्धित मौलिक प्रश्नों पर चिन्तन करने वाले महारथी, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के देहान्त से हमारे राष्ट्रीय जीवन की ऐसी क्षति हुई है जो अपूर्णनीय है। उसे पूरा करना कई वर्षों तक निकट भविष्य में मुश्किल नजर आता है। डा० राधाकृष्णन् अपनी सुन्दर पगड़ी, धोती, लम्बा कोट, चमकते हुए चेहरे और प्रेमपूर्ण सहयोग की भावना और हर व्यक्ति के कन्धे पर हाथ रखने वाले एक ऐसे राजनीतिज्ञ, एक ऐसे चमत्कारी पुरुष थे जिन्होंने भारत के हर पहलू को समझा था और उसकी अद्वितीय सेवा की थी। भारत मां ऐसे बेटों से निहाल होती है। उन्होंने न सिर्फ भारत के विश्वविद्यालयों में वरन् दुनिया के विश्वविद्यालयों में पठन-पाठन, विशेष लेक्चर में तरह-तरह की ख्याति और उपाधियां प्राप्त कीं। उन्होंने भारत की गरिमा को ऊंचा किया। डाक्टर राधाकृष्णन् की कल्पनाओं ने भारत के राष्ट्रीय जीवन को मजबूत, सुदृढ़, सुसंस्कृत और परिपक्व बनाया। चाहे वह किसी विश्वविद्यालय के कुलपति रहे हों, जैसा तब तक वाइस चान्सलर कहा जाता था, चाहे वह उप राष्ट्रपति के पद पर रहे हों, चाहे वह राष्ट्रपति के पद पर रहे हों, उन्होंने हर पद को सुशोभित किया है।

He shed lustre on every post he held. उन्होंने हर पद को सुशोभित किया। पद से उनकी शोभा नहीं होती थी बल्कि पद उनके द्वारा शोभित होता था। हमारे भारत के प्रतिनिधि के नाते यूनेस्को में, अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में, उनकी चमक, उनकी वाणी की ओजस्विता हमारे गौरवशील इतिहास की पुण्य निधि है। मान्यवर, जैसा संयम, उदारता, निर्भीकता तथा सहिष्णुता डाक्टर राधाकृष्णन् के जीवन के अंग थे, उसे पाना दुर्लभ-सा है। उनमें महात्मा जी का स्वभाव तथा कवीन्द्र रवीन्द्र की उद्भट बुद्धि, जवाहर लाल नेहरू की मानवता और शंकराचार्य से लेकर अनेकों आचार्यों के प्रतिभावान गुणों की सामञ्जस्यता का पूर्ण परिचय देने की क्षमता थी उसके साथ ही भारत के सभी धर्मों को समझ कर (Essential Unity of all Religions) के महान् लेखक, उस महान् पुस्तक के रचयिता के रूप में उन्होंने अपना एक अभूतपूर्व परिचय दिया था। डाक्टर राधाकृष्णान् का पार्थिव शरीर इस संसार से चला गया लेकिन वे अमर हैं, उस मानवता में जिसे उन्होंने निरन्तर शिक्षा के क्षेत्र में, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, संसार के विश्वविद्यालय में घूम-घूम कर वाणी द्वारा और अपनी लेखनी द्वारा आने वाली पीढ़ी के लिये हमेशा हमेशा के लिये छोड़ा है न उनकी वाणी के ओज और लेखनी के तेज दोनों की मान्यवर, तुलना जब हो तो ऐसा लगता था कि 'गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पावं'। वाणी की ओजस्विता और लेखनी के तेज के बारे में कहना कठिन है, कहना मुश्किल है। ऐसा अभूतपूर्व सम्मिश्रण सहज नहीं मिलता जहां लेखनी और वाणी तूलिका की तरह चित्रित करती हों, अंकित करती हों।

मान्यवर, मेरा सौभाग्य था कि एक विद्यार्थी के नाते बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में सन् 1940 में जब वे वहां पर उप कुलपति, वाइस चान्सलर थे, उस समय प्रयाग विश्वविद्यालय की वादानुवाद प्रतियोगिता के लिए उसमें, प्रतिनिधित्व करने के लिए गया था। पहली बार एक मंच पर उसी साल कन्वोकेशन एड्रेस देने के लिये महात्मा गांधी जी पधारे थे। एक ही मंच पर महात्मा गांधी, राधाकृष्णन्, पंडित जवाहर लाल नेहरू और बहुत से हमारे देश के नेता सब एक साथ, आज भी स्मृति में चित्रित हैं और राधाकृष्णन् जी को जवाहर लाल नेहरू के कन्धे पर हाथ रखते हुए बात करते देखा। फिर उनको देखा उपराष्ट्रपति के रूप में, उपाध्यक्ष के रूप में, राज्य सभा में दर्शक दीर्घा से। मेरा सौभाग्य नहीं था कि मैं वहां जाऊं। लेकिन उनकी नम्रता और कोमलता, उनकी विशाल हृदयता, उनकी शालीनता, उनका सौजन्य, उनकी गम्भीरता अद्भुत थी जो बड़े से बड़े गुस्से को भी ठन्डा कर दे और उद्दण्डता को नम्रता में परिवर्तित कर दे।

मान्यवर, भारत के इस महान पुत्र के निधन पर सारा देश शोक संतप्त है। हम उत्तर प्रदेश निवासी भी उस शोक में सम्मिलित हैं। वह शोक हमारा शोक, भारत का शोक, सबका शोक है और अगर नम्रतापूर्वक कहूं तो शायद मानवता ने अपना एक अच्छा और सच्चा प्रतीक ऐसे समय खोया है जब वह कराह रही है और ढूंढ रही है मार्ग अस्त्र-शस्त्रों से बचने की दिशा में, एक दूसरे के दबाव से बचने की दिशा में। ऐसे महान राष्ट्र सेवक, जननायक, प्रखर और तेजस्वी भारतीय और उसके प्रतीक डाक्टर राधा कृष्णन् की मृत्यु पर मैं, मान्यवर, इस सदन की ओर से, अपने दल और अपनी ओर से संवेदना का प्रस्ताव उनके दुखी और शोक संतप्त परिवार को यह कह कर भेजना चाहता हूं कि सारे भारत ने अपना भाई, अपना

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

पिता खोया है, अपना अगुवा खोया है। उनके दुःख में सारा देश सम्मिलित है और साथ ही मान्यवर, सारे प्रदेश में इस शोक के कारण सरकारी कार्यालय तो बन्द ही हो गये लेकिन इस माननीय सदन के सभी विरोधी दलों के नेताओं ने आपके कक्ष में परामर्श के बाद यह भी प्रस्ताव किया है कि आज यह सदन डाक्टर राधाकृष्णन् की स्मृति में नतमस्तक हो कर, अपना कार्य स्थगित कर दे। इन शब्दों के साथ एक बार फिर डाक्टर राधाकृष्णन् के चरणों में मैं सबकी ओर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)--

अध्यक्ष महोदय, इस दुखदायी अवसर पर माननीय नेता सदन ने जो कुछ कहा है मैं अपने आपको, विपक्ष को और भारतीय लोक दल को उससे पूर्णतया सम्बद्ध करता हूं। उन्होंने बहुत अच्छी भाषा में पूर्णतया जो इस अवसर पर कहने की बात थी वह प्रायः सभी कह दी। डाक्टर राधाकृष्णन् का नाम लेने के साथ मुझको तो सर ईश्वरचन्द विद्यासागर और राइट आनरेबिल, श्रीनिवास शास्त्री की याद आती है जो एक मामूली अध्यापक के पद से उठकर राष्ट्र के क्षितिज पर छा गये थे। उनका भाषण सुनते ही बनता था। उनकी अपूर्व विद्वत्ता और भाषा पर उनका अधिकार असाधारण था। उनसे देश का मस्तक ऊंचा हुआ है इसमें दो राय नहीं हो सकती। हर मनुष्य को वैसे तो एक दिन इस चित्रपट से हटना है। वे भी हटे, लेकिन वे उन चन्द व्यक्तियों में से थे जिनको यह देश बहुत दिनों तक याद रखेगा। इन शब्दों के साथ मैं प्रार्थना करूंगा कि मेरी तथा मेरे दल की ओर से और सारे विपक्ष की ओर से हमारी संमवेदना उनके संतप्त परिवार को भेजने की कृपा करें।

*श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)--

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन तथा माननीय नेता विरोधी दल ने इस सदन के सारे व्यक्तियों के हृदय की भावनाओं को बहुत अच्छी तरह से प्रकट किया है। जैसा माननीय नेता विरोधी दल ने कहा, जैसा माननीय नेता सदन ने जिन शब्दों में कहा, मैं उन शब्दों में कहने में असमर्थ हूं। मैं उनके गुणों का बखान क्या करूं, वे तो भारत की एक महान् विभूति थे, सरस्वती का उन पर एक अनोखा वरदान था। हिन्दू दर्शन के वे एक अभूतपूर्व विद्वान् थे। जहां कहीं भी इस विश्व में वे गये, जिन-जिन एक्टीविटीज में उन्होंने भाग लिया, उन्होंने सदा भारत का मस्तिष्क ऊंचा किया। चाहे वे राजदूत थे, चाहे वे विद्या क्षेत्र में थे, चाहे कहीं भाषण देने गये, या यू0एन0ओ0 में गये, जहां कहीं भी वे गये, लोगों ने उनकी प्रतिभा की सराहना की और उनका लोहा माना। एक बात उनमें और विशेष थी कि वे मनसा, वाचा, कर्मणा से भारतीय संस्कृति की मूर्ति थे। मुझे कभी कोई अवसर उनके निकट रहने का प्राप्त नहीं हुआ। मुझे वह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन मान्यवर, मैंने उनकी जो पुस्तकें पढ़ीं, जो उनकी वेश-भूषा को देखा, उस सबसे, जैसा माननीय नेता सदन ने कहा, मैं आन्तरिक दृष्टि से और मानसिक दृष्टि से भी बहुत ही प्रभावित हुआ जब कभी उनका कोई लेख निकलता था या भाषण निकलता था मैं उसे पढ़ने के लिये उतावला हो जाता था कि उसमें कोई नई बात मुझे मिलेगी और उसे पढ़ कर मैं बड़ा प्रभावित होता था। मैं इतना ही कह सकता हूं कि उनके खोने से भारतवर्ष ने एक ऐसी विभूति खो दी है जिसकी क्षतिपूर्ति होना सम्भव नहीं। हर क्षेत्र मे उन्होंने एक ऐसी ख्याति प्राप्त की थी जिसके लिये

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

भारतवर्ष गर्व कर सकता है। मैं और इस अवसर पर क्या कहूं, उनकी आत्मा के प्रति और उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी और मेरे दल की भावनाओं को उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। मैं पुनः उनके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये अपने विचार समाप्त करता हूं।

*श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी-गढ़वाल)—

मान्यवर, डा० राधाकृष्णन् के सम्बन्ध में माननीय नेता सदन, माननीय नेता, विरोधी दल तथा माननीय नेता, जनसंघ दल ने काफी विस्तार के साथ कह चुके हैं, उन्हें खोकर भारतवर्ष ने ही न केवल एक बहुत अच्छा विचारक, दार्शनिक और शिक्षाविद् खोया है, बल्कि पूरे दार्शनिक जगत ने एक बहुत बड़े एवं ऊंचे चिन्तक को खोया है। वे जिस पद पर भी रहे, चाहे वाइस चान्सलर के रूप में, चाहे राजदूत के रूप में, चाहे उपाध्यक्ष के रूप में, चाहे राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने बड़ी गरिमा के साथ अपने पद को निभाया। जिस जिले से मैं आता हूं उससे तो उनका एक विशेष सम्बन्ध रहा है। हमारे यहां का जो राज परिवार था उससे डाक्टर साहब का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। मुझे याद है कि जब मैं छात्र था और बहुत छोटा बालक था, वे राज परिवार के अतिथि बन कर आये थे। हम लोग समझते थे कि शायद वे कोई तड़क-भड़क वाले व्यक्ति होंगे लेकिन जब उनका दर्शन हुआ तो हमने देखा कि वे इतनी सादी वेशभूषा में थे कि उनको देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि कितनी सादगी के साथ वे रहते हैं। लेकिन इसके साथ ही साथ कैसे उनके विचार थे, यह हम सब जानते हैं। मान्यवर, डाक्टर राधाकृष्णन् हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उनके विचार जो उन्होंने बड़े-बड़े ग्रन्थों में रखे हैं, आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा देंगे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से तथा माननीय मुख्य मन्त्री जी और अन्य नेताओं ने जो भावनायें व्यक्त की हैं, उनसे सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी यह संवेदना डाक्टर साहब के संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री नियाज हसन खां (जिला प्रतापगढ़)—

अध्यक्ष महोदय, आज यह अफसोसनाक खबर सुनकर हम सबको बहुत हद्द तक अफसोस हुआ। डाक्टर राधाकृष्णन् इन्सानियत के पुतला थे, आज वह इन्सानियत यतीम हो गयी। जिस पद पर भी वे रहे, उसको उन्होंने इज्जत बख्शी। हिन्दुस्तान की ऊंची हस्तियों में से थे। उनकी कोई मिसाल नहीं थी। आज उनके उठ जाने से हिन्दुस्तान गरीब हो गया है। मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से उनके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् न केवल इस देश के बल्कि समस्त मानवता के प्रतीक थे। मान्यवर, पूरब के वह एक प्रकाश थे जो पश्चिम को रोशनी दे रहे थे, आज वह तिरोहित हो गया। मान्यवर, मानवता तड़प रही है, मानवता कराह रही है। मान्यवर, दर्शन शास्त्र के विद्यार्थी होने के कारण मुझे स्वर्गीय राधाकृष्णन् की किताबें पढ़ने का सौभाग्य मिला है। किस खूबी के साथ उन्होंने पाश्चात्य दर्शन के साथ भारत के दर्शन को दिखलाया है। कंटकेनैव कंटकम्, "इट इज मीनिंगलेस टु इनवाइट सेटिन टू अपरूट सेटिन"।

---

*वक्ता ने अपने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री जगदंग प्रसाद ओझा---]

विभिन्न क्षेत्रों में लोग मनीषी हुआ करते हैं। मान्यवर, ऐसे कम लोग हुआ करते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में एक ही व्यक्ति मनीषी हो। वे दर्शन शास्त्र के पंडित, सीधा सादा व्यक्तित्व, व्यावहारिक, राजनीतिक तनाव का समन्वय उस महान् व्यक्ति में मिलता है। यह बड़ा ही दुखद अवसर है। हम और हमारा दल नतमस्तक है और माननीय नेता सदन तथा अन्य विरोधी दल के नेताओं ने उनके सम्बन्ध में जो भावनायें व्यक्त की हैं, उनसे म और मेरा दल अपने आप को सम्बद्ध करता है और मेरा आपसे अनुरोध है कि उनके संतप्त परिवार तक हमारी संमवेदना पहुंचा दें।

श्री अध्यक्ष---

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के माननीय नेताओं ने डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के सम्बन्ध में जो भावोद्गार व्यक्त किये हैं, उससे मैं अपने को और सदन को सम्बद्ध करता हूं। डाक्टर राधाकृष्णन् एक संस्था थे और इस देश के परिवेश में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत के परिवेश में, ख्यातनामा, व्याख्याकार और पाश्चात्य धार्मिक दार्शनिक थे। वे सम्पूर्ण प्रतिभा के धनी और अलौकिक तथा असामान्य विद्वान और पंडित थे। उनका जन्म 1888 ई0 म 5 सितम्बर के दिन हुआ था? उनकी शिक्षा मद्रास क्रिश्चियन कालेज में हुई थी। उसके उपरान्त वे रेजीडेन्सी कालेज जो मद्रास में है, वहीं वे प्रोफेसर हुए। और इसके बाद 1916-17 तक प्रोफेसर रहने के पश्चात् वह कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर आफ फिलासफी 1921-31 तक रहे। 1939-49 तक जैसा आपको मालूम है, वह हमारे इस प्रदेश के अन्तर्गत स्थित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर रहे। 1927 से 1950 तक वह इंडियन फिलासफिकल कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और इसके बाद 1929 में वह हिब्बर्ट लेक्चरार रहे। इसके बाद स्पैलडिंग प्रोफेसर आफ ईस्टर्न रेलिजन, आक्सफोर्ड में हुये और मेम्बर आफ दि इन्टरनेशनल कमेटी आन इन्टेलेक्चुअल कोआपरेशन, लीग आफ नेशन्स, 1931 से 1939 तक रहे। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति वह 1943 में रहे। वह आनरेरी फेलो एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल थे। प्रेसीडेन्ट, इंडियन यूनिवर्सिटी कमीशन, 1948 में थे और इसमें उन्होंने एक ऐतिहासिक कार्य किया यूनेस्को में, इंडियन डेलीगेशन यूनेस्को के लीडर 1946, 1947, 1948, 1949 और 1950 में थे। यू0 एस0 एस0 आर0 में भारत के राजदूत वह 1949 से 1952 तक रहे। 1952 से 1962 तक वह इस देश के वाइस प्रेसीडेन्ट रहे। 1962 से 1967 तक जैसा आपको विदित है वह इस देश के राष्ट्रपति रहे। 1954 में भारत रत्न की उपाधि से उनको विभूषित किया गया। उन्होंने बहुत सुन्दर ग्रन्थ लिखे हैं। उनमें से मुख्य हैं---इंण्डियन फिलासफी, हिन्दू व्यू आफ लाइफ, फिलासफी आफ उपनिषद्स, भगवत् गीता।

एक ऐसे व्यक्ति के उठ जाने से निश्चय ही राष्ट्रीय चेतना और जीवन को अपूर्ण क्षति होती है और डाक्टर राधाकृष्णन् न केवल इस देश के बल्कि सारे विश्व के वह एक रत्न थे और आज सारा विश्व उनके उठ जाने से क्षतिग्रस्त हो गया है। ऐसी राष्ट्रीय क्षति और शोक की बेला में जो भावोद्गार आज आपने व्यक्त किये हैं और जो अपेक्षा की है कि आपकी संवेदनायें शोक संतप्त परिवार को भेज दें, तो निश्चय ही वैसा मैं करूंगा और ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शाश्वत् शान्ति प्रदान करे।

अब हम दो मिनट के लिये मौन रखते हैं।

(सभी सदस्य 2 मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष—

अब हम उठते हैं और कल 11 बजे फिर बैठेंगे। आज का काम 26 अप्रैल, 1975 को लेंगे।

(इसके बाद सदन 11 बजकर 30 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
दिनांक: 17 अप्रैल, 1975।

सत्यमेव जयते

पी० एस० यू० पी०—एल० 126 वि० सभा (541)—1975—8451।